Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XII Issue – III May - June 2023

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

मार्गदर्शक
डॉ. करण राठोड
पी. व्ही. डी. टी. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन
फॉर वूमेन, चर्चगेट

संशोधिका
श्रीमती शिल्पा रमेशचंद्र चौबे
पी. व्ही. डी. टी. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन
फॉर वूमेन, चर्चगेट

सारांश

बालक परिवार के व्यवहार, आचार-विचार, नैतिकता आदि अपने परिवार की मान्यताओं के अनुसार निर्मित एवं विकसित करता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना हैं परन्तु इसमें गृह-वातावरण की भूमिका मुख्य है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है। अतः अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे घर में बालकों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। अभिभावकों को चाहिए कि वह अपनी संतानों चाहे वह लड़के हों या फिर लड़कियाँ दोनों को शिक्षा प्रदान करने हेतु समान अवसर उपलब्ध करवाएँ।

आज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों का समुचित विकास करके उसे राष्ट्र के लिये सफल नागरिक बनाना है। अध्ययन आदत, उपलब्धि प्राप्ति की दिशा में एक प्रेरक घटक है। प्रभावी अध्ययन प्रवृत्ति छात्रों को सफलता हासिल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शैक्षिक समस्याओं के कारण जो बाधाएँ उत्पन्न होती हैं उनके लिए शिक्षा प्रणाली में आज नित नए सुधार किये जा रहे हैं परंतु यह शासन द्वारा किया जाने वाला बाह्य प्रयास मात्र है। विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में उनकी अभिवृत्ति तथा उनके पारिवारिक वातावरण का अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ता है। वर्तमान काल में परिवार का महत्त्व कम हो गया है परन्तु बालक की शिक्षा कभी भी उचित ढंग से नहीं हो सकती जब तक कि परिवार का सहयोग प्राप्त न हो। एक बालक शिक्षा के लिए विद्यालय जाता है परंतु वह वहाँ चौबीस घंटों में केवल पाँच घंटे ही व्यतीत करता है, शेष समय उसका परिवार के साथ ही व्यतीत होता है। अतः एक बालक की शिक्षा पर जो प्रभाव माता-पिता का हो सकता है, वह किसी और संस्था का नहीं हो सकता है। माता-पिता जितने शिक्षित होंगे बच्चे का विकास उतना ही अच्छा होगा। यही कारण है कि शिक्षा प्रदान करने में माता-पिता का सहयोग आवश्यक है। भावी जीवन की आधारशिला का निर्माण करने के लिए बच्चों को अपनी भाषा एवं

उच्चारण का ज्ञान, नैतिक व सामाजिक प्रशिक्षण, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार, मूल्यों एवं आदतों का विकास, पसंद व रूचियों का विकास, प्रेम की शिक्षा, अभिभावक की शिक्षा से सीधे प्रभावित होती है।

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed Based on a work at *http://www.goeiirj.com*

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र व समाज की उन्नति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बिना शिक्षा के देश के सामाजिक-आर्थिक विकास की कल्पना करना असंभव है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया से समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है, तथा शिक्षा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष्' का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने सिखाने की क्रिया।

'परिवार' शिक्षा का सबसे प्रमुख अनौपचारिक तथा औपचारिक साधन दोनों है। बच्चों 36की शिक्षा में घर या परिवार की मुख्य भूमिका होती है। सामाजिक परिवेश का ज्ञान भी बच्चे परिवार के वातावरण से ही सीख पाते हैं। परिवार के सदस्यों द्वारा निर्मित घर के वातावरण को ही 'गृह'-परिवेश कहते हैं। परिवार एक छोटी-सी सामाजिक संस्था है जिसमें रहते हुए बालक माता-पिता के अतिरिक्त भाई-बहनों तथा अन्य संबंधियों के संपर्क में आता है। सभी सदस्य एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालते हैं। बालक परिवार के प्रत्येक सदस्य से प्रत्येक क्षण प्रभावित होता है तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस प्रकार परिवार बालक पर अपना स्थायी प्रभाव अंकित करता है। बालक वैसा ही बनता है जैसा उसका घर होता है। घर के वातावरण के कारण गाँधीजी ने प्रेम और सत्य के सिद्धांतों को अपनाया। शिवाजी ने अपनी माता से रामायण और महाभारत की शिक्षा प्राप्त करके ही मराठा राज्य की नींव डाली। भारत में प्राचीन काल से ही बालक की शिक्षा पर घर के प्रभाव को अत्यंत महत्व दिया गया है।

शैक्षणिक गतिविधि की अवधारणा

शैक्षणिक गतिविधि एक स्वतंत्र प्रकार की मानवीय गतिविधि है जिसमें सामाजिक अनुभव, सामग्री और आध्यात्मिक संस्कृति का हस्तांतरण पीढ़ी से पीढ़ी तक होता है। इस परिभाषा के आधार पर, गतिविधियों को प्रतिष्ठित किया जाता है। "शिक्षक छात्र में उन "आंतरिक नींव" (ज्ञान, विश्वास, विधियों, कार्यों) को बनाने का प्रयास करता है जो छात्र को भविष्य में अपनी भविष्य की गतिविधियों को स्वतंत्र रूप से प्रबंधित करने की अनुमति देगा। इस बीच, यह निर्धारित करना महत्वपूर्ण है ... एक बड़ा लक्ष्य - छात्र के व्यक्तित्व का विकास, उसके व्यक्तित्व के क्षेत्रों और

उसके प्रचार के विभिन्न प्रकार के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए। इस सिद्धांत में शैक्षणिक गतिविधि बाद के व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए छात्र की गतिविधियों पर शिक्षक के आत्मकेंद्रित नियंत्रण के रूप में प्रकट होती है। शैक्षणिक गतिविधि शिक्षक का एक उद्देश्यपूर्ण, प्रेरित प्रभाव है, जो बच्चे के व्यक्तित्व के व्यापक विकास और उसे आधुनिक सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों में जीवन के लिए तैयार करने पर केंद्रित है।

समस्या विधान

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

कार्यात्मक व्याख्या

1. माध्यमिक विद्यालय :- शिक्षा जो प्राथमिक शिक्षा के पश्चात विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जिनमें कक्षा 9वीं तथा 10वीं की कक्षाएं संचालित होती है।

2. विद्यार्थी :- विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी दो शब्दों (विद्या + अर्थी) से मिलकर बना है, विद्या अर्जन करने वाला विद्यार्थी कहलाता है।

3. शैक्षिक गतिविधि :- शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों द्वारा की गई गतिविधियां।

4. पारिवारिक वातावरण :- परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है, जहां उसका व्यक्तित्व आकार ग्रहण करता है। सभी रूचियों आदतों, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं के विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

5. अध्ययन :- 9वी तथा 10 वी में पढ़ने वाले विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया को अध्ययन कहा गया है।

गृहीतके

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव अधिक होता है।
2. पारिवारिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव अधिक होता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक गतिविधियों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्र और छात्राओं में पारिवारिक स्तर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. छात्र अथवा छात्राओं के आधार पर विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति पर पारिवारिक वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर विद्यार्थी के पारिवारिक वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर

1. स्वतंत्र चर:- पारिवारिक वातावरण
2. आश्रित चर:- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं शैक्षिक गतिविधियां

व्याप्ती

1. यह शोध अध्ययन कार्य महाराष्ट्र राज्य के पालघर जिले के वसई तालुका के अंतर्गत नालासोपारा पूर्व उप नगर का समावेश किया गया है।
2. सेठ विद्या मंदिर इंग्लिश हाई स्कूल अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय का समावेश किया गया है।
3. इस अनुसंधान के लिए कक्षा 9वी के छात्र / छात्राओं का चयन किया गया है।
4. शोध कार्य हेतु माध्यमिक विद्यालय के 50 छात्रों और 50 छात्राओं अर्थात कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

मर्यादा

1. इस अनुसंधान में मराठी, उर्दू, गुजराती, हिंदी इस माध्यम के विद्यालयों का समावेश नहीं किया गया है।
2. इस अनुसंधान में कक्षा 9वीं के छात्रों के अलावा किसी दूसरे विद्यार्थियों का समावेश नहीं किया गया है।
3. यह अनुसंधान सेठ विद्या मंदिर इंग्लिश हाई स्कूल विद्यालय से संबंधित है।
4. यह अनुसंधान अंग्रेजी माध्यम से मर्यादित है।

संशोधन विषय की आवश्यकता

छात्रों की शैक्षिक गतिविधियों एवं बौद्धिक क्षमताओं पर उनका पूरा भविष्य निर्भर है। प्रत्येक विद्यालय इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनेक कार्य करते हैं। छात्रों की गतिविधियों से परिवार के सदस्यों को विद्यार्थी के अधिक ज्ञान का लाभ मिलता है जो वे अपने दैनिक जीवन में उपयोग कर सकते हैं। इससे उन्हें अधिक सक्षमता और स्वयंसेवा की भावना मिलती है। छात्रों के विकास के साथ-साथ इससे परिवार के वातावरण में सकारात्मकता भी आती है। इन कार्यों में पठन-पाठन के अतिरिक्त विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान एवं अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की भाषाओं का ज्ञान मुख्य है।

संशोधन विषय का महत्व

शिक्षा की प्रारंभिक प्रक्रिया सर्वप्रथम परिवार से प्रारंभ होती है, जहां विद्यार्थी अपने जीवन का अधिक समय व्यतीत करता है। मनुष्य का सर्वांगीण विकास पारिवारिक जीवन से ही संभव है। परिवार के माध्यम से मनुष्य आत्म कल्याण की ओर अग्रसर होता है। राष्ट्र की प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जो कि सर्वप्रथम परिवार से ही वह ग्रहण करता है। परिवार का वातावरण बालक की शैक्षिक रूचि एवं मानसिक क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, जहां स्वस्थ वातावरण उनके विकास में सहायक सिद्ध होता है, वही इसके विपरीत अस्वस्थ वातावरण उनकी प्रगति में बाधक बनता है।

संशोधन समस्या से संबंधित भारत में हुए संशोधन

1. अर्चना कुमारी एवं डॉ कुमारी स्वर्णरेखा (2022) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक वातावरण का प्रभाव - इस शोध का **उद्देश्य** माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक वातावरण का प्रभाव शोधकर्ता ने विवरणात्मक अनुसंधान संरचना का प्रयोग किया है। शोध उपकरण के रूप में के एस मिश्र द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण अनुसूची एवं शैक्षणिक उपलब्धि मापनी विद्यार्थियों के नौवीं एवं दसवीं के परीक्षा के प्राप्त अंकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है। न्यादर्श चुनाव हेतु लाटरी पद्धति के आधार पर मुजफ्फर जिले के मुरारी प्रखंड के चार माध्यमिक विद्यालयों के 50-50 छात्रों अर्थात कुल 100 छात्रों का उत्तर दाताओं के रूप में चयन किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक, विचलन एवं टी परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष मे यह पता चलता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

2. निधि अग्रवाल (2020) पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य है उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक रूचि पर प्रभाव का अध्ययन करना। यह अध्ययन रायपुर जिले के अंतर्गत 20 विद्यालयों का चयन किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र और 20 छात्राएं कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक रुचि पर प्रभाव पाया गया है।

वर्णनात्मक अनुसंधान विधि

शैक्षिक शोध के अन्तर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का बहुतायत से प्रयोग होता है। इसे मानवीय सर्वेक्षण के नाम से भी पुकारा जाता है। इनका प्रमुख मुद्दा वर्तमान घटनाक्रमों का अध्ययन करना है। अर्थात वर्तमान घटनाक्रमों के विभिन्न पक्षों का विवरण देना इस प्रकार के शोधों को पूरा करने का निहित उद्देश्य है। उपलब्ध परिस्थितियों या दशाओं की प्रकृति का पता लगाना या वर्तमान परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से मानकों को निश्चित करना या विशेष प्रकार की घटनाओं गोचरों के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों को निर्धारित करना इस विधि के क्षेत्र में ही आता है। इस विधि में यह ध्यान देना होगा कि वर्णनात्मक सर्वेक्षण की विधि अपनी जटिलता की स्तर की दृष्टि से अन्य शोध विधियों से भिन्नता रखती है तथा इसके तहत साधारण आवृत्ति या परिगणना से लेकर अत्यन्त अर्न्तनिहित सम्बन्धात्मक विश्लेषणों से युक्त अध्ययन सम्पन्न होते है।

संशोधन की कार्यवाही

सर्वप्रथम संशोधक ने मार्गदर्शक के सहायता से संशोधन समस्या की निश्चित की । तत्पश्चात संशोधक ने संशोधन प्रपत्र (आराखडा) तैयार किया। संशोधन में कौन सा कार्य कब और कैसे करना है इसका नियोजन किया। नियोजन करने के पश्चात संशोधन कार्य की शुरुआत की गई। संशोधक ने स्वयं प्रश्नावली का निर्माण किया। संशोधक द्वारा चयनित समस्या विषय से संबंधित साहित्य के वाचन / पुनरावलोकन के लिए संशोधक प्रत्यक्ष पी. व्ही. डी. टी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय मुंबई के पुस्तकालय में उपलब्ध साहित्य का वाचन करते हुए शोध विषय की जानकारी संकलित की। मासिक लेख, समाचार पत्र, पत्रिका इत्यादि के वाचन द्वारा संबंधित संशोधन साहित्य का वाचन किया। संशोधक में संशोधन कार्य के लिए सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया है अतः प्रश्नावली को साधन के रूप में उपयोग किया है।

संशोधक ने प्रश्नावली को भर के लेने के लिए वसई क्षेत्र के एक माध्यमिक विद्यालय का चयन किया है तथा यादृच्छिक नमूना पद्धति से 50 छात्र और 50 छात्राओं का चयन किया है। तथा कुल 100 विद्यार्थियों का चयन जनसंख्या के रूप में किया है। प्रश्नावली भरने के लिए संशोधक ने विद्यालय में जाकर संबंधित छात्र-छात्राओं से प्रश्नावली भर कर ली। प्रश्नावली लेने के पश्चात संकलित जानकारी का अर्थ निर्वचन करके संशोधक ने कच्चा अहवाल तयार किया तथा उस पर निष्कर्ष ज्ञात किया। संशोधक ने अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शक प्राध्यापक से चर्चा की तथा प्रश्नावली के निष्कर्ष तथा उस पर उपाययोजना की जांच पड़ताल की।

प्रस्तुत संशोधन के लिए चयनित संशोधन पद्धति

प्रस्तुत संशोधन कार्य के लिए संशोधक में वर्णनात्मक संशोधन पद्धति का प्रयोग किया है। इस पद्धति में वर्तमान स्थिति का वर्णन किया जाता है तथा सर्वेक्षण के आधार पर जानकारी

संग्रहित की जाती है। उस पर उपाय योजना निश्चित करने के लिए सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत संशोधन कार्य में वर्णनात्मक पद्धति के सर्वेक्षण पद्धति का अवलंबन किया गया है।

जनसंख्या

संशोधन के लिए के लिए संशोधक ने जिस समूह का चयन किया है उसे ही जनसंख्या कहते हैं। जनसंख्या का आकार बहुत ही बड़ा होता है और उस पर अभ्यास करना संभव नहीं होता है इसलिए संशोधन के लिए जनसंख्या क्यों विभिन्न स्तर पर विभाजित किया गया है।

1. माध्यमिक विद्यालय
2. अंग्रेज़ी माध्यम
3. कक्षा 9वीं
4. छात्र-छात्राएं

इन सभी के सापेक्ष महत्व और संशोधन की समस्या को ध्यान में रखकर जनसंख्या का चयन किया किया गया है। जनसंख्या का चयन करने के लिए संशोधक ने सरल यादृच्छिक लाटरी पद्धति का उपयोग किया है।

न्यादर्श

जनसंख्या में समस्या के आधार पर सभी घटकों का समावेश किया गया है। संशोधक द्वारा वसई क्षेत्र में संचालित माध्यमिक विद्यालय के 100 विद्यार्थियों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया है। शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में 50 छात्रों और 50 छात्राओं का चयन प्रस्तुत शोध कार्य के लिए किया है।

संशोधन के साधन

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थी ने प्रश्नावली तंत्र का उपयोग किया है। समस्या के स्वरूप और विषय को ध्यान में रखकर संबंधित विषय वस्तु का अध्ययन किया है। संशोधक ने अपने विषय से संबंधित प्रश्नों को चयन शोध कार्य के अनुरूप किया।

शोध विषय के अनुरूप प्रश्नों का निर्माण प्रश्नावली के लिए किया। तत्पश्चात प्रश्नावली की जांच के लिए शिक्षणतज्ञ डॉ. के.सी. राठौड़ सर के समक्ष प्रश्नावली को प्रस्तुत किया। प्रश्नावली की जांच होने के पश्चात यह एक स्वयं निर्मित प्रमाणित प्रश्नावली का निर्माण हुआ। प्रश्नों की समीक्षा होने के पश्चात इन प्रश्नों में से कुल 30 प्रश्नों का चयन प्रश्नावली के रूप में किया गया। उत्तर देने वाले विद्यार्थी के पास प्रश्न के 4 विकल्प प्रदान किए गए है। शोधकार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली में विद्यार्थियों के शैक्षणिक गतिविधियों से संबंधित घटकों का समावेश किया गया है। सामान्य तौर पर प्रश्नावली को हल करने में 30 मिनट का समय पर्याप्त है।

प्रश्नावली में सरल प्रश्नों का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली चतुसूत्री पर आधारित है जिसका विश्लेषण पूर्ण सहमत,सहमत,असहमत,पूर्ण असहमत के रूप में किया गया है। प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय पूर्ण सहमत को 4 अंक, सहमत को 3 अंक, असहमत को 2 अंक तथा पूर्ण असहमत को 1 अंक प्रदान किया गया है।

संशोधन की प्रत्यक्ष कार्यवाही

शोधकर्ता द्वारा कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों पर यह अनुसंधान की जानकारी संकलित की गई है।

उद्देश्य के अनुसार सामग्री के विश्लेषण का भाग

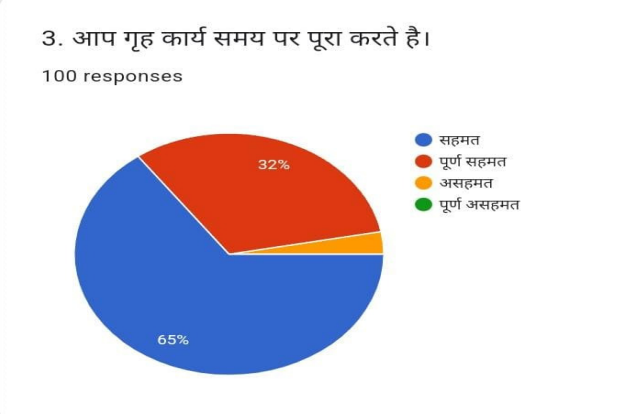

अर्थ निर्वचन- गृह कार्य समय पर पूरा करने के संदर्भ में विद्यार्थियों द्वारा 65% सहमत, 32% पूर्ण सहमत तथा 3% असहमत में उत्तर प्राप्त हुए हैं।

निष्कर्ष- गृह कार्य पूरा करना एक तरीके से शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए पाठ का पुनरावर्तन है। यह परीक्षा में अच्छे गुण प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है।

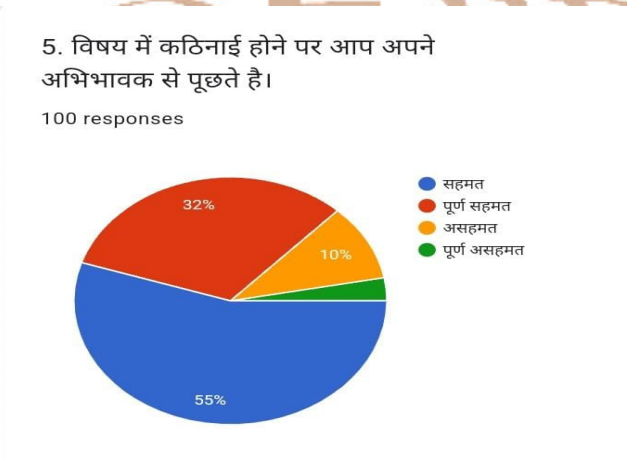

अर्थ निर्वचन- प्रस्तुत प्रश्न में विद्यार्थियों द्वारा 55% सहमत, 32% पूर्ण सहमत, 10% असहमत तथा 3% पूर्ण असहमत में उत्तर प्राप्त हुए हैं।

निष्कर्ष- अभिभावक और विद्यार्थी के बीच आपस में सहयोगपूर्ण व्यवहार होना आवश्यक है। जिससे वे खुलकर माता पिता से अपने विषय की कठिनाइयों का समाधान प्राप्त कर सके।

सामान्यीकृत निष्कर्ष

अभिभावकों को अपने बच्चों की गतिविधियों एवं शिक्षा दीक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। विद्यार्थी परिवार के व्यवहार आचार- विचार नैतिकता आदि अपने परिवार की मान्यताओं के अनुसार निर्मित एवं विकसित करता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। अभिभावक को विद्यार्थियों के आत्म-प्रकटीकरण पर रोक नहीं लगाना चाहिए साथ ही साथ उनकी बातों को सुनना चाहिए तथा उनकी बातों पर गौर करना चाहिए जिससे वे बेझिझक अपनी बातों को माता-पिता से कह सके, जिससे उनका व्यक्तित्व विकास एवं संवेगात्मक बुद्धि प्रभावित न हो सके। माता-पिता को बच्चों के साथ उन सृजनात्मक गतिविधियों को अधिकाधिक प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए।

शिफारिशें

प्राचार्य हेतु शिफारिशें

1. प्राचार्य को विद्यालय में शिक्षक हेतु उचित प्रशिक्षण प्राप्त कराने की सुविधा प्रदान करनी चाहिए।
2. प्राचार्य द्वारा शिक्षक को वर्ग अध्यापन को उन्नत बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
3. प्राचार्य को शालेय विकास के कार्यक्रमों का आयोजन करवाना चाहिए।

शिक्षक हेतु शिफारिशें

1. शिक्षक को सदैव कार्यशाला द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। शिक्षक को सदैव अपने ज्ञान का नूतनीकरण करते रहना चाहिए।
2. शिक्षक को अपने पेशे में आने वाली हर चुनौती का सामना करने में सक्षम बनना चाहिए।
3. शिक्षकों को अपने अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना चाहिए।
4. शिक्षक को अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ समुचित व्यवहार रखना चाहिए।
5. शिक्षक को सदैव अपने कार्य के प्रति समर्पण का भाव रखना चाहिए।

संस्थाचालक हेतु शिफारिशें

1. विद्यार्थियों के ज्ञान समृद्धि के लिए समय-समय पर शैक्षिक कार्यक्रम और प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन करना चाहिए।
2. विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में शैक्षिक कार्य हेतु उचित वातावरण निर्माण करना चाहिए।
3. विद्यार्थी को शैक्षणिक गतिविधियों में सदैव सहयोग करना चाहिए।

समाज हेतु शिफारिशें

1. समाज में शिक्षार्जन के लिए लड़के-लड़कियों में किसी भी तरह का कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए।
2. समाज में शिक्षा को उच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।
3. समाज में अपने व्यवहार को सुदृढ़ रखने की आवश्यकता है जिससे बालक और बालिकाओं उत्तम शिक्षा बिना किसी रूकावट के प्राप्त कर सकें।

भविष्य/ भावी शोध हेतु विषय

1. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के संदर्भ में हिंदी विषय की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य शर्मा श्री राम 2004: 'बच्चों को संस्कार माता-पिता ही दे सकते हैं' युग निर्माण योजना, मथुरा

2. एच .के 2004: अनुसंधान विधियां ,एच .पी भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा ।

3. कपिल गुप्ता एस.पी .2009 : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद |

4. कुलश्रेष्ठ एस.पी. 2008: शिक्षा मनोविज्ञान, लाल बुक डिपो, मेरठ |

5. गुप्ता एस.पी. 2010: उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक, इलाहाबाद |

6. पाठक पि. डी. 2007: शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा |